नव भारत

| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

क्रिकेट की नई महाशक्ति है भारत

रविवार को खेले गए टी-20 विश्व कप 2026 के फाइनल में न्यूजीलैंड पर 96 रनों की शानदार जीत के साथ भारत ने एक बार फिर साबित कर दिया कि वह अब केवल क्रिकेट खेलने वाला देश नहीं, बल्कि क्रिकेट की नई वैश्विक महाशक्ति बन चुका है. यह जीत सिर्फ एक ट्रॉफी का इजाफा नहीं है, बल्कि पिछले चार दशकों में भारतीय क्रिकेट के निरंतर विकास, आत्मविश्वास और संस्थागत मजबूती का प्रतीक है.

भारतीय क्रिकेट टीम का यह पांचवां बड़ा अंतरराष्ट्रीय खिताब है. इससे पहले भारत 1983 और 2011 में एकदिवसीय विश्व कप जीत चुका है, जबकि 2007, 2024 और अब 2026 में टी-20 विश्व कप अपने नाम कर चुका है. इन उपलब्धियों ने भारत को क्रिकेट के इतिहास में एक ऐसी स्थिति में ला खड़ा किया है, जहां उसकी तुलना अब केवल महान टीमों से नहीं बल्कि एक स्थायी शक्ति के रूप में की जाती है.

दरअसल भारतीय क्रिकेट की यह सफलता अचानक नहीं आई है. इसके पीछे वर्षों की संस्थागत तैयारी, मजबूत घरेलू ढांचा, और प्रतिभाओं को पहचानने की व्यापक प्रणाली काम कर रही है. एक समय था जब भारतीय टीम मुख्यत: महानगरों और बड़े शहरों के खिलाड़ियों पर निर्भर रहती थी. लेकिन आज तस्वीर पूरी तरह बदल चुकी है. छोटे शहरों और गांवों से आने वाले खिलाड़ी अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी प्रतिभा का परचम लहरा रहे हैं. झारखंड, उत्तर प्रदेश, गुजरात, मध्यप्रदेश, हरियाणा और राजस्थान जैसे राज्यों से लगातार नए सितारे उभर रहे हैं. यह भारतीय क्रिकेट के लोकतंत्रीकरण का संकेत है.

भारतीय क्रिकेट की इस ताकत के पीछे सबसे बड़ी भूमिका इंडियन प्रीमियर लीग यानी आईपीएल की भी रही है. आईपीएल केवल एक क्रिकेट टूर्नामेंट नहीं बल्कि दुनिया का सबसे बड़ा खेल आयोजन बन चुका है. इस लीग ने भारतीय खिलाड़ियों को वैश्विक स्तर के खिलाड़ियों के साथ खेलने और उनसे सीखने का अवसर दिया है. इसके साथ ही इसने क्रिकेट को एक विशाल उद्योग में भी बदल दिया है. क्रिकेट से जुड़े प्रसारण अधिकार, विज्ञापन, फ्रेंचाइजी निवेश और खेल प्रबंधन के कारण आज लाखों लोगों को प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से रोजगार मिल रहा है. होटल उद्योग, पर्यटन, परिवहन और मनोरंजन क्षेत्र को भी इससे बड़ा आर्थिक लाभ होता है. आईपीएल के दौरान देश के कई शहरों में पर्यटन गतिविधियां तेजी से बढ़ जाती हैं, जिससे स्थानीय अर्थव्यवस्था को भी मजबूती मिलती है.

आज स्थिति यह है कि वैश्विक क्रिकेट प्रशासन में भी भारत की भूमिका निर्णायक बन चुकी है. भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड यानी बीसीसीआई आर्थिक रूप से दुनिया का सबसे शक्तिशाली क्रिकेट बोर्ड है और अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद में उसकी आवाज को विशेष महत्व दिया जाता है. कई बड़े वैश्विक टूर्नामेंट भारत की भागीदारी और बाजार के बिना सफल नहीं माने जाते. हालांकि इस सफलता के साथ जिम्मेदारी भी उतनी ही बड़ी है. भारत को यह सुनिश्चित करना होगा कि क्रिकेट का विकास केवल आर्थिक ताकत तक सीमित न रहे, बल्कि खेल की गुणवत्ता, बुनियादी ढांचे और जमीनी स्तर पर प्रतिभा के विकास पर भी लगातार ध्यान दिया जाए.

निस्संदेह आज भारत क्रिकेट की नई महाशक्ति है. लेकिन इस शक्ति को स्थायी बनाने के लिए खेल भावना, संस्थागत पारदर्शिता और प्रतिभा के निरंतर पोषण की आवश्यकता हमेशा बनी रहेगी. यही वह रास्ता है जो भारतीय क्रिकेट को आने वाले दशकों तक विश्व क्रिकेट के शिखर पर बनाए रख सकता है.

एलपीजी का घरेलू उत्पादन बढ़ाना एक रणनीति

श्रीकुमार दत्ता

> प्राकृतिक गैस और एलपीजी का घरेलू उत्पादन बढ़ाना एक और दीर्घकालिक रणनीति है जो ऊर्जा सुरक्षा को मजबूत कर सकती है. नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों और बायोगैस जैसी वैकल्पिक खाना पकाने की तकनीकों में निवेश भी आयातित ईंधन पर निर्भरता को कम कर सकता है. अंतत:, यह घटना इस बात की याद दिलाती है कि ऊर्जा की वहनीयता केवल एक आर्थिक मुद्दा नहीं है, बल्कि सामाजिक कल्याण और सतत विकास का एक महत्वपूर्ण घटक है. किफायती खाना पकाने के ईंधन को सुनिश्चित करना केवल एक आर्थिक चुनौती नहीं है. यह सार्वजनिक स्वास्थ्य की रक्षा, छोटे व्यवसायों के समर्थन और समावेशी विकास की दिशा में भारत के निरंतर विकास के लिए आवश्यक है.

मध्य पूर्व में हाल ही में शुरू हुए युद्ध का असर न केवल इज़राइल और ईरान पर पड़ा है, बल्कि एलपीजी की मांग और आपूर्ति में असंतुलन के कारण अनगिनत भारतीयों के घरों पर भी पड़ा है. घरेलू एलपीजी सिलेंडर की कीमत में 60 रुपए प्रति सिलेंडर की वृद्धि हुई है, जबकि व्यावसायिक सिलेंडरों की कीमत में 115.00 रुपए प्रति सिलेंडर की वृद्धि हुई है. भारत में एलपीजी की कीमतों में हालिया वृद्धि वैश्विक भू-राजनीति, ऊर्जा बाजारों और घरेलू आर्थिक वास्तविकताओं के जटिल अंतर्संबंध को दर्शाती है.

खाना पकाने की गैस एक आवश्यक घरेलू वस्तु है जिसका उपयोग लाखों परिवार और हजारों रेस्तरां, होटल और छोटे भोजनालय प्रतिदिन करते हैं. इसलिए, इसकी कीमत में किसी भी वृद्धि का सीधा असर जीवन यापन की लागत और छोटे व्यवसायों के संचालन पर पड़ता है. नवीनतम मूल्य संशोधन ने घरेलू और व्यावसायिक दोनों प्रकार के एलपीजी सिलेंडरों की कीमतों में वृद्धि की है, जिससे नागरिकों और नीति निर्माताओं दोनों में चिंता पैदा हो गई है.

एलपीजी की कीमतों में वृद्धि का मुख्य कारण वैश्विक आर्थिक कारक हैं. भारत अपनी एलपीजी की अधिकांश आवश्यकता अंतरराष्ट्रीय बाजारों से आयात करता है. परिणामस्वरूप, घरेलू कीमतें वैश्विक कच्चे तेल और गैस की कीमतों से अत्यधिक प्रभावित होती हैं. जब अंतरराष्ट्रीय कीमतें बढ़ती हैं, तो एलपीजी आयात की लागत भी बढ़ जाती है, जिससे तेल कंपनियों को घरेलू कीमतों में तदनुसार समायोजन करना पड़ता है.

भारत सरकार की प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना ने एलपीजी की उपलब्धता को काफी हद तक बढ़ाया है, जिससे राष्ट्रीय मांग में वृद्धि हुई है. ग्रामीण और कम आय वाले परिवारों को स्वच्छ खाना पकाने का ईंधन उपलब्ध कराने के उद्देश्य से शुरू की गई इस पहल ने स्वास्थ्य और जीवन स्तर में सुधार किया है, लेकिन आपूर्ति पर दबाव भी बढ़ा दिया है.

विश्व के तेल और गैस आपूर्ति का एक बड़ा हिस्सा इसी क्षेत्र से आता है, और भारत अपनी ऊर्जा आवश्यकताओं का एक महत्वपूर्ण हिस्सा पश्चिम एशिया के देशों से आयात करता है. होर्मुज जलडमरूमध्य जैसे समुद्री मार्ग, जो वैश्विक ऊर्जा पारगमन के सबसे महत्वपूर्ण मार्गों में से एक है, के बाधित होने का खतरा बना रहता है. परिणामस्वरूप, संघर्ष के समय अंतरराष्ट्रीय कच्चे तेल की कीमतों में तेजी से वृद्धि होती है. चूंकि एलपीजी की कीमतें वैश्विक कच्चे तेल की कीमतों से जुड़ी होती हैं, इसलिए ये भू-राजनीतिक तनाव अंतत: भारत में खाना पकाने की गैस की कीमतों में वृद्धि का कारण बनते हैं.

आम नागरिकों के लिए, एलपीजी की कीमतों में वृद्धि का मतलब पहले से ही तंग घरेलू बजट पर अतिरिक्त दबाव है. खाना पकाने की गैस एक बुनियादी आवश्यकता है, और परिवार आसानी से इसकी खपत कम नहीं कर सकते. जब सिलेंडर की कीमत बढ़ती है, तो परिवारों को अपनी मासिक आय का एक बड़ा हिस्सा खाना पकाने के ईंधन पर खर्च करने के लिए मजबूर होना पड़ता है. यह स्थिति विशेष रूप से मध्यम वर्ग और निम्न आय वाले परिवारों के लिए चुनौतीपूर्ण है. यह भी जोखिम है कि कुछ गरीब परिवार लकड़ी, कोयला या केरोसिन जैसे पारंपरिक ईंधनों की ओर लौट सकते हैं. इस तरह के बदलाव से स्वास्थ्य और पर्यावरण पर नकारात्मक परिणाम हो सकते हैं और स्वच्छ खाना पकाने की प्रथाओं की दिशा में हुई प्रगति उलट सकती है.

कमर्शियल एलपीजी की कीमतों में बढ़ोतरी से रेस्तरां, सड़क किनारे के फूड स्टॉल, चाय की दुकानों और छोटे होटलों को काफी परेशानी हो रही है. ईंधन की कीमतों में मामूली वृद्धि भी उनके परिचालन खर्चों पर काफी असर डाल सकती है. छोटे भोजनालय आमतौर पर बहुत कम लाभ मार्जिन पर चलते हैं. एलपीजी की कीमतों में अचानक वृद्धि उन्हें या तो खाद्य पदार्थों की कीमतें बढ़ाने या अतिरिक्त लागत स्वयं वहन करने के लिए मजबूर करती है. कीमतें बढ़ाने से ग्राहकों की मांग कम हो सकती है, जबकि लागत वहन करने से लाभप्रदता घट जाती है. सड़क किनारे के विक्रेता और छोटे फूड स्टॉल, जो भारत की अनौपचारिक अर्थव्यवस्था का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं, इस तरह के मूल्य झटकों के प्रति विशेष रूप से संवेदनशील हैं.

मालवा- निमाड़ की डायरी

होली पर बेरंग हुए कालूहेड़ा

संजय व्यास

भाजपा 'प्रशिक्षण वर्ग' के माध्यम से जनप्रतिनिधियों को समय-समय पर हिदायत देती रही है- जनसेवक बनो, शासक नहीं. प्रेम से बोलो, सोच समझकर बोलो और बोलने से पहले सोचो कि क्या बोलना भी है? सो उज्जैन उत्तर से भाजपा के विधायक अनिल जैन कालूहेड़ा ने पहली लाइन आत्मसात कर ली.

अपने विधान सभा क्षेत्र में सडक़ चौड़ीकरण की जद में आ रहे घर-परिवारों को नोटिस मिलते ही होली के मौके पर कालूहेड़ा पर जन सेवा का रंग हावी हो गया और अपनी ही सरकार की सडक़ चौड़ीकरण योजना का विरोध करते हुए प्रभावितों का समर्थन करने के साथ आंदोलन की चेतावनी भी दे डाली यही नहीं भाजपा विधायक ने सीएम मोहन यादव को इस बारे में एक पत्र भी लिख दिया. अब यहीं से बखेड़ा शुरू हो गया.

सिंहस्थ की तैयारियों के बीच बाधक बन रहे कालूहेड़ा को आनन-फानन भोपाल से बुलावा आ गया. मुख्यमंत्री हाउस में सीएम मोहन यादव, प्रदेश अध्यक्ष और प्रदेश प्रभारी ने उनकी क्लास ले डाली. उन्हें जनसेवक बनो, शासक नहीं के बाद की लाइन सोच समझकर बोलो का अर्थ भी समझा दिया. उनके जनसेवक के रंग की खुमारी उतार बेरंग कर दिया. उसके बाद

विधायक अनिल जैन कालूहेड़ा के सुर बदल गए हैं. शीर्ष नेताओं की क्लास के बाद कालूहेड़ा ने अपने बयानों पर खेद जताया और अब सिंहस्थ के कार्यों में पूर्ण सहयोग देने का वादा किया है.

सिंघार की मंशा पर पानी फिरा

विधानसभा सत्र के दौरान मंत्री कैलाश विजयवर्गीय और नेता प्रतिपक्ष उमंग सिंघार के मध्य हुई कहा-सुनी से उपजा विवाद अभी भी शांत नहीं हुआ है. हाल ही में आलीराजपुर में आयोजित भगोरिया उत्सव में दोनों का आमना-सामना हो गया. उत्सव की मिठास राजनीतिक तल्खी में बदल गई. औकात के मुद्दे पर उमंग सिंघार ने विजयवर्गीय को घेरने की भरपूर कोशिश की, पर विषम परिस्थिति को अपने स्वभाव के मुताबिक विजयवर्गीय टाल गए. उन्होंने आदिवासियों के अपार समूह के बीच सिंघार को कोई मौका नहीं दिया और सिंघार की उनसे उलझने की मंशा पर पानी फेर दिया.

जिला पंचायत अध्यक्ष का गुस्सा फूटा

खंडवा संसदीय क्षेत्र में सांसद और वरिष्ठ भाजपा विधायक के बीच आए दिन की मनमुटाव की खबरें जगजाहिर हैं. अब भाजपा राजनीति में खंडवा जिला भी गुटबाजी में उलझ गया है. यहां स्थानीय विधायक और जिला पंचायत अध्यक्ष की खींचतान विगत दिनों सडक़ पर आ गई. विगत दिनों पार्टी कार्यालय में आयोजित आजीवन सदस्यता निधि की महत्वपूर्ण बैठक में हंगामा हो गया जब जिला पंचायत अध्यक्ष पिंकी वानखेड़े ने संगठन में खुद को दरकिनार किए जाने पर खुलेआम मोर्चा खोल दिया. उन्होंने पार्टी कार्यक्रमों में अपनी अवहेलना पर कर्ताधर्ताओं को खरी-खरी सुना दी. सत्ता और प्रशासन में पहले ही हाशिए पर चल रहीं वानखेड़े ने भारी सभा में माइक थामकर दो-टूक कहा, मैं एक जनप्रतिनिधि हूँ, लेकिन मुझे पार्टी की बैठकों की सूचना तक नहीं दी जाती, मेरे साथ जो हो रहा है, वह गलत है. वानखेड़े की तीखी आपत्ति से असहज हुए जिलाध्यक्ष राजपाल सिंह तोमर ने तुरंत डैमेज कंट्रोल की कोशिश की. उन्होंने सार्वजनिक रूप से खेद जताते हुए माफी मांगी और स्वीकार किया कि वानखेड़े एक सम्मानित पद पर हैं. जिलाध्यक्ष ने इस चूक का ठीकरा जिला महामंत्री धर्मेंद्र बजाज के सिर फोड़ते हुए कहा कि सूचना देने की जिम्मेदारी उनकी थी. हालांकि, राजनीतिक गलियारों में इस 'चूक' को महज तकनीकी गलती नहीं, बल्कि गहरी गुटबाजी से जोडक़र देखा जा रहा है. यह पूरा मामला विधायक कंचन तनवे और जिला पंचायत अध्यक्ष के बीच लंबे समय से चली आ रही खींचतान का नतीजा बताया जा रहा है. दरअसल, महामंत्री धर्मेंद्र बजाज को विधायक का बेहद करीबी माना जाता है. चर्चा है कि इसी 'करीबी' के चलते जानबूझकर प्रोटोकॉल का उल्लंघन कर जिला पंचायत अध्यक्ष को सूचना नहीं दी गई.

निजी विश्वविद्यालयों की लूट-खसोट

शिक्षा ऐसा क्षेत्र है, जो संविधान की समवर्ती सूची में होने से केंद्र व राज्य दोनों के अधिकार में आता है. केंद्र व राज्यों ने देश के सभी भागों में शिक्षा के प्रसार के लिए पर्याप्त निवेश नहीं किया. ग्रामीण व पिछड़े क्षेत्रों में शिक्षा संस्थाओं का अभाव है.

इसमें कोई शक नहीं कि देश में शिक्षा मुनाफे का सौदा बन गई है, तभी तो स्कूल-कॉलेजों का कोचिंग क्लास से टाई-अप होता है. फीस लेने के बाद भी कॉलेज में पढ़ाई नहीं होती और विद्यार्थी ऐसी कोचिंग क्लास के भरोसे रहते हैं, जो परिक्षा के प्रश्नपत्र उन्हें उपलब्ध करा दे. यदि पेपर लीक होते हैं, तो इसके पीछे कोई बड़ा रैकेट सक्रिय रहता है. शिक्षा में व्याप्त अव्यवस्था को देखते हुए सुप्रीम कोर्ट ने देश की सभी प्राइवेट और डीम्ड विश्वविद्यालयों का राष्ट्रव्यापी ऑडिट करने का महत्वपूर्ण आदेश दिया था. देश की सबसे बड़ी अदालत ने केंद्र, सभी राज्यों, केंद्र शासित प्रदेशों तथा यूजीसी को निर्देश दिया था कि वह शपथपत्र दाखिल कर बताएं कि यह विश्वविद्यालय कैसे स्थापित हुए, इन्हें कौन संचालित करता है और क्या यह वास्तव में मुनाफा रहित तरीके से काम करते हैं? सभी जानते हैं कि निजी विश्वविद्यालय अनाप-शनाप फीस लेकर भरपूर मुनाफा कमाते हैं. बड़े व्यावसायिक घरानों ने ऐसे विश्वविद्यालय खोल रखे हैं. उन्हें सरकार से सस्ती जमीन, कर्ज तथा बहुत सी सुविधाएं मिल जाती हैं पर समाज को उनका बहुत कम योगदान रहता है. यह ऐसा व्यवसाय है जिसमें उद्योग घरानों को कोई जोखिम नहीं उठाना पड़ता. 2017 में सुप्रीम कोर्ट ने डीम्ड यूनिवर्सिटी द्वारा सुदूर अध्ययन (डिस्टेंस लर्निंग) द्वारा दी गई इंजीनियरिंग की डिग्रियां अवैध करार दी थीं और बगैर अनुमति ऐसे पाठ्यक्रम चलाने से रोक दिया था. सुप्रीम कोर्ट के वर्तमान आदेश में पूछा गया है कि निजी विश्वविद्यालयों ने जमीन कैसे हासिल की, वित्तीय नियोजन कैसे किया और क्या उनके पास विश्वसनीय शिकायत निवारण केंद्र है? मुख्य सचिव से लेकर यूजीसी प्रमुख तक की जिम्मेदारी पूछी जा रही है.

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

निशानेबाज

अब चल निकला नया ट्रेंड पर्सनैलिटी को करते पेटेंट

पड़ोसी ने हमसे कहा, 'निशानेबाज, हम अपने व्यक्तित्व या पर्सनैलिटी के अधिकार को पूरी तरह सुरक्षित या पेटेंट करा लेना चाहते हैं, ताकि कोई हमारी चाल-ढाल, बोली, स्टाइल की नकल न करे.'

हमने कहा, 'यह फिल्म स्टार या सेलेब्रिटीज का चोंचला है, जो खुद को वेरी स्पेशल मानते हैं. उन्हें लगता है कि कोई उनकी आवाज, संवाद या शैली की कॉपी करके पैसे न कमाने लगे. उन्होंने बड़ी मेहनत व सूझबूझ से अपनी शैली रची है, जिस पर कोई डाका न डालने पाए. इसलिए शत्रुघ्न सिन्हा चाहते हैं कि उनकी खास स्टाइल में कोई 'खामोश' न बोले. अनिल कपूर भी चाहेंगे कि उनकी तरह कोई 'झकास' बोलने की हिम्मत न करे.'

पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज सारे मिमिक्री आर्टिस्ट किसी न किसी फिल्म स्टार के डायलॉग बोलने के तरीके की नकल करते हैं. सुदेश भोसले व जॉनी लिवर को आपने राजकुमार, अशोककुमार, ओमप्रकाश, संजीवकुमार, राजेश खन्ना की आवाज निकालते सुना होगा. राजू श्रीवास्तव अमिताभ बच्चन की नकल किया करते थे. यदि मिमिक्री आर्टिस्ट को ऐसी नकल करने से रोक दिया गया, तो वे अपनी गुजर-बसर कैसे करेंगे? कितने ही अनाउंसर ने अमीन सयानी की नकल करने की कोशिश की लेकिन उन्हें कभी नहीं रोका गया. दिलीपकुमार के हावभाव व संवाद बोलने की नकल राजेन्द्रकुमार, मनोजकुमार और शाहरुख खान ने की, लेकिन दिलीपकुमार ने कोई आपत्ति नहीं जताई. लोग असली और नकली का अंतर खुद ही समझ लेते हैं. लता मंगेशकर के समान आवाज में सुमन कल्याणपुर भी गाती थीं लेकिन लता ने इस पर एतराज नहीं जताया था. कुछ कलाकार तो लालूप्रसाद यादव की आवाज भी निकालते हैं तो कोई प्रधानमंत्री मोदी के समान बोलने की कोशिश करता है.'

हमने कहा, 'आजकल पर्सनैलिटी राइट के नाम पर खुद को इसलिए सुरक्षित किया जाने लगा है कि कोई किसी प्रसिद्ध व्यक्ति की आवाज निकालकर गलत चीजों का कमर्शियल प्रचार न करने पाए.'

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 12193 - डॉ. सागर खादीवाला

1	2		3	■	4		5
6		■	7			■	
	■	8		■	9		
10	11	■	12	13		■	■
■	14	15	■		■	16	17
18			19		■	20	
	■	■		■	21		
22			■	23			■

ऊपर से नीचे
1. भलमनसी, शरीफ होना (उर्दू) 2. जाड़ा, ठंडक, सर्दी (सं.) 3. जिससे लाभ होता हो 4. एक प्रसिद्ध यूनानी दार्शनिक, जो प्लेटो के गुरु थे 5. घना, पास-पास बसा हुआ 11. एक प्रकार के मुसलमान साधु 13. जन्म देने वाली 15. श्रवणेंद्रिय 16. गणेश, गुरु 17. उन्नति करना, आगे की ओर बढ़ना 18. कमलनाल, कमल की जड़ 19. क्षय नामक रोग, तपेदिक (सं.) 21. प्रतिदिन, सदा

बाएं से दाएं
1. चंद्रकला, चंद्रमा का अंश (सं.) 4. सुगंध, सुंदर वास, सुंदर आवास 6. रजनी, रात्रि 7. रह-रहकर आने वाली दुर्गंध, भभकने की क्रिया 8. तोता, सुग्गा 9. राजा 10. अंधेरा, अंधकार (सं.) 12. चांदी 14. भारत के दक्षिण का एक टापू जहां रावण राज्य करता था 16. ब्राम्हण, पुरोहित, मंत्र वेदों का ज्ञाता 18. बहुत सुंदर नेत्रों वाली स्त्री 20. सांप, हिमालय की एक प्राचीन जाति 21. भाग्य, होनी 22. लज्जा से वशीभूत 23. हानिकर, घात करने वाला

Solution 12192

म	र्द		म	हा	म	हि	म
णि		म	द	र	सा		ज
कां	ति		द	क	न		बू
च	ल	नी				उ	र
न	ह	र		शि	क	स्त	
	न			शि		रा	गी
शा			पा	र	द		ति
प	रा	भू	त		रा	ला	का

ज्योतिषाचार्य पंडित प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में आर्थिक सहयोग मिलेगा, शिक्षा कार्य में अचानक यात्रा हो सकती है, वर्ष के मध्य में सामाजिक कार्यों में मन खिन्न रहेगा, व्यापार में व्यय और भागदौड़ एवं वृद्धि होगी, मित्र के कारण तनाव हो सकता है, वर्ष के अन्त में प्रतिष्ठा एवं यश में वृद्धि होगी, घरेलू कार्यों में व्यस्तता रहेगी, व्यय में नियंत्रण रखकर कार्य करें.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियोंको कार्यक्षेत्र में वृद्धि होगी, कर्मचारियों का सहयोग रहेगा, वृष और तुला राशि के व्यक्तियों को वरिष्ठ अधिकारियों का सहयोग रहेगा, सिंह राशि के व्यक्तियों को सामाजिक कार्य में ख्याति प्राप्त होगी, मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियोंको प्रोत्साहन प्राप्त होगा, मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों को मान सम्मान में वृद्धि होगी, धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को निज नई योजनाओं पर विचार विमर्श होगा.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक सुन्दर, सुशील कोमल भावुक परोपकारी तथा बुद्धिमान होगा. आकर्षक व्यक्तित्व का होगा. शिक्षा उत्तम रहेगी. अपने उद्देश्यों की पूर्ति करेगा. लगनशील और सत्यवादी होगा. यात्राप्रिय रहेगा.

उदयकालीन ग्रह चाल

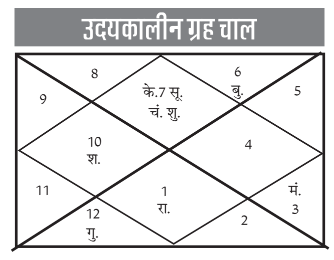

पंचांग

रा.मि. 19 संवत् 2082 चैत्र कृष्ण सप्तमीं भौमवासरे रात 12/11, अनुराधा नक्षत्रे शाम 5/46, हर्षण योगे प्रात: 7/23, विष्टि करणे सू.उ. 6/8, सू.अ. 5/52, चन्द्रचार वृश्चिक, शु.रा. 8,10,11,2,3,6 अ.रा. 9,12,1,4,5,7 शुभांक- 0,3,7.

मेष- जीवनसाथी का सहयोग मिलेगा. व्यर्थ की परेशानी से बचें. दूर दराज की यात्रा हो सकती है. मित्रता लाभदायक एवं सहयोगी रहेगी.

वृषभ- नौकरी में उत्तरदायित्व बढ़ेगे. आमदानी के जरिये एक से अधिक होंगें. कार्य की रूपरेखा पर विचार विमर्श हो सकता है. शुभ संदेश मिलेगा.

मिथुन- कोई ऐसी बात मालुम होगी, जिससे मानसिक प्रसन्नता रहेगी. मित्र के संबंध में प्रिय समाचार मिलेगा. मान सम्मान और प्रतिष्ठा बढ़ेगी.

कर्क- मान सम्मान बढ़ेगा. उपहार या लाभ का मार्ग प्रशस्त होगा. उठाईगीरों से सावधानी रखे. परिश्रम अधिक करना पड़ सकती है.

सिंह- मैत्री संबंधी शुभ समाचार मिलेगा, जिसकी आपको प्रतीक्षा है, उस कार्य में सफलता मिलेगी. धार्मिक यात्रा होगी. व्ययभार की अधिकता रहेगी.

कन्या- व्यवसायिक समस्याओं का निदान होगा. खरीदी बिक्री के कार्यो में सावधानी बांछनीय. यश, मान-सम्मान मिलेगा. गुमी वस्तु मिलने से प्रसन्नता होगी.

तुला- आर्थिक मामलों में सफलता मिलेगी. शुभ संदेश प्राप्त होने का योग है. मानसिक प्रसन्नता रहेगी. दस्तकारी कार्यो में व्ययभार अधिक होगा.

वृश्चिक- पारिवारिक कार्यो मे व्यस्तता रहेगीं. आर्थिक मामलों में बुजुर्गो की सलाह उपयोगी रहेगी. संतान के कार्य में विशेष ध्यान देकर कार्य करना लाभकारी रहेगा.

धनु- छोटी सी बात पर उत्तेजित होकर अपना कार्य न बिगाड़ें. संबंधों में कड़वाहट आ सकती है. किसी अभिन्न मित्र से भेंटवार्ता होगी. हर्ष रहेगा.

मकर- आय का नया मार्ग प्रशस्त होगा. स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहने की आवश्यकता है. पारिवारिक संबंधों में मधुरता रहेगी. संदेश मिलेगा.

कुम्भ- परिश्रम अधिक करना पड़ेगा. साझेदारी में कोई भी कार्य न करना आपके लिये हितकर रहेगा. मान सम्मान मिलेगा. सहयोग बना रहेगा.

मीन- कार्य की अधिकता रहेगी. शरीर में थकान महसूस होगी. संबंधों में मधुरता आयेगी. राजनैतिक सहयोग बना रहेगा. साहस बढ़ेगा.

व्यापार भविष्य

चैत्र कृष्ण सप्तमीं को अनुराधा नक्षत्र के प्रभाव से अलसी, सूरजमुखी, सोना, चांदी, मिर्च, कपास, के भाव में मंदी होगी. जायफल, अजवाईन, धनियां, के भाव में तेजी होगी. वायदा विचार आज 11 बजकर 53 मिनिट से 16 मिनिट के रूख पर व्यापार करना लाभप्रद रहेगा. भाग्यांक- 5634 है.

SUDOKU 7325

		5			8			3
	7			3	5			
3						6		
							8	5
	6			7			1	
4	2							
		1						8
			7	4			3	
6			2			7		

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-दोकू 7324

9	4	8	7	5	1	6	2	3
3	7	5	6	4	2	1	8	9
6	2	1	3	9	8	4	7	5
4	1	3	8	6	7	9	5	2
5	8	6	9	2	4	3	1	7
2	9	7	5	1	3	8	4	6
8	6	4	2	7	9	5	3	1
7	3	9	1	8	5	2	6	4
1	5	2	4	3	6	7	9	8